बारबरा श्यौरथ ने इंटरनेशनल यूथ लाइब्रेरी, म्यूनिख में 15 साल तक निदेशक के पद पर कार्य किया है। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान इस संस्था को काफी समृद्ध किया है। वे पेशे से कला इतिहासकार हैं तथा उनकी रुचि का क्षेत्र बाल साहित्य की पुस्तकों में चित्रांकन व शोध रहे हैं। इनसे जुड़े मुद्दों पर उन्होंने कई लेख व किताबें भी लिखी हैं। यह साक्षात्कार बाल साहित्य के विभिन्न मुद्दों पर केन्द्रित है।

बारबरा श्यौरथ

'इन्टरनेशनल बोर्ड ऑन बुक्स फोर यंग पीपुल' के साथ लम्बा जुड़ाव रहा है। बाल साहित्य पर अन्तर्राष्ट्रीय शोध के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आजकल इस क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही हैं।

बाल पुस्तकालय : एक सांस्कृतिक धरोहर

प्रश्न : आप म्यूनिख में इंटरनेशल यूथ लाइब्रेरी में करीब पंद्रह वर्षों तक निदेशक रही हैं। इस लाइब्रेरी के मुख्य उद्देश्यों तथा क्रियाकलापों के बारे में संक्षेप में बताएं।

उत्तर : यह पुस्तकालय म्यूनिख के एक अद्वितीय मध्ययुगीन कैसल ब्लूटेनबर्ग में स्थित है। यहां पर बच्चों व किशोरों की करीब 130 भाषाओं की पांच लाख पुस्तकें संगृहीत हैं। इसकी स्थापना 1949 में जर्मन-यहूदी पत्रकार जेला लेपमैन ने की थी। इसे दुनिया में बच्चों एवं किशोरों की पुस्तकों का सबसे बड़ा पुस्तकालय माना जाता है। इस पुस्तकालय का सबसे प्रमुख उद्देश्य है कि यह एक ऐसा संग्रहालय बने जिसका उपयोग बच्चों की पुस्तकों में रुचि लेने वाले आसानी से कर सकें। इसके लिए पुस्तकों को डिजिटल कैटलॉगिंग सिस्टम से जोड़ा जा रहा है। इस कार्य की वर्ष 2012 के अंत तक पूरा होने की संभावना है। इसके जरिए इन पुस्तकों का इंटरनेट के माध्यम से आसानी से पूरी दुनिया में उपयोग किया जा सकेगा। इस पुस्तकालय में एक राइट्र्स म्यूजियम भी स्थापित किया गया है जिसमें बच्चों से जुड़े लेखकों व कलाकारों के जीवन व उनके काम से नई पीढ़ी को परिचित कराने का प्रयास किया जाता है। इसके अलावा संस्था हर साल बाल साहित्य में रुचि रखने वाले लोगों के लिए पन्द्रह फैलोशिप भी प्रदान करती है जिसमें फैलोशिप पाने वाले लोग यहां आकर दुनिया भर की पुस्तकों के विविध पहलुओं पर तीन महीने तक संक्षिप्त अध्ययन कर सकते हैं। इसके साथ ही यहां समय-समय पर विश्व बाल साहित्य से जुड़े विभिन्न सेमिनार, संगोष्ठियां, चर्चाएं होती रहती हैं। सभी बच्चों के लिए यह पुस्तकालय हमेशा खुला रहता है जिसमें वे अपने माता-पिता के साथ आकर दुनिया भर की विभिन्न पुस्तकों का आनंद ले सकते हैं।

प्रश्न : आप पुस्तकालय की आवश्यकता को किसी देश के शैक्षिक व सांस्कृतिक विकास के संदर्भ में कैसे देखती हैं? कहने का आशय है कि बच्चों व किशोरों की पुस्तकों के संरक्षण एवं उन्हें बढ़ावा देने के लिए इस तरह की संस्था का किसी देश के लिए क्या महत्त्व है?

उत्तर : बच्चों की पुस्तकों की किसी देश की सांस्कृतिक धरोहर में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यह किसी समाज की शैक्षिक अवधारणाओं और वहां के बचपन और बीते हुए समय के पारिवारिक जीवन का आईना होती हैं। यह पुस्तकें वर्तमान समय की शैक्षिक चर्चाओं तथा इतिहास को समझने की दृष्टि से काफी उपयोगी होती हैं। पुराने समय में किसी देश के राष्ट्रीय पुस्तकालय में बच्चों की पुस्तकों को नहीं रखा जाता था लेकिन पिछले बीस वर्षों में यह विचार बदला है और बच्चों की पुस्तकों को महत्त्व दिया जाने लगा है और इन्हें विभिन्न अध्ययनों में सहायक माना जाने लगा है।

प्रश्न : आप साहित्य की जरूरत को बच्चों या समाज के लिए किस तरह देखती हैं?

उत्तर : साहित्य ने ऐतिहासिक रूप से हमारी भौगोलिक सीमाओं और सांस्कृतिक भेदों के बावजूद इंसानों को एक-दूसरे से जोड़ने और समझने में मदद की है। समृद्धि जो कि साहित्य के जरिए आती है, वह हमारी बौद्धिक और भावनात्मक खुशहाली के लिए महत्त्वपूर्ण है। इस प्रभाव के बारे में किसी पैमाने के आधार पर कोई दावा नहीं किया जा सकता, फिर भी निश्चित तौर पर दावे के साथ कहा जा सकता है कि साहित्य का असर होता है। किसी देश का बाल साहित्य उस देश की सांस्कृतिक और रचनात्मक संवेदनशीलता और गुणवत्ता के आईने की तरह होता है। मैं सोचती हूं कि किताबें आनन्दित और स्वस्थ बचपन के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होती हैं और इसका बेहतरीन उदाहरण अस्ट्रिड लिंडग्रेन हैं जो बहुत ही सहजता और खूबसूरती के साथ अपनी मृत्यु के बाद भी स्वीडन जैसे देश को एक सूत्र में बांधे हुए हैं। मेरे ख्याल से स्वीडन में कोई भी ऐसा घर नहीं होगा जिसमें उनकी किताबें न हों... यह किताबों की ताकत है और आनन्द जो पूरी धरती पर फैला है!

प्रश्न : जैसा कि जानकारी है कि आपने इस पुस्तकालय में अपने कार्यकाल के दौरान कुछ नए कार्य शुरू किए? उदाहरण के लिए, 'हैलो, डियर एनेमी!' नामक प्रदर्शनी इसके बारे में संक्षेप में कुछ बताएं?

उत्तर : हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि इंटरनेशनल यूथ लाइब्रेरी की स्थापना दूसरे विश्व युद्ध के तुरंत बाद 1949 में हुई थी। इसकी संस्थापक जेला लेपमैन इस बात को स्वीकार करती थीं कि पुस्तकों के माध्यम से विभिन्न देशों के बच्चों व किशोरों तथा नाजी जर्मनी की किशोर पीढ़ी को शांति के पक्ष में प्रभावित किया जा सकता है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'ए ब्रिज ऑफ चिल्ड्रन बुक्स' में शांति व सहनशीलता के विचारों को काफी दृढ़ता से रखा है। परंतु नब्बे के दशक में दुनिया के विभिन्न देशों में युद्ध विभीषिका, हिंसा आदि को देखकर महसूस यह किया कि हमें इस विषय पर चित्र पुस्तकों का एक संग्रह तैयार करना चाहिए। इस तरह का संग्रह पहली बार 1998 में आई.बी.बी.वाई. की नई दिल्ली की कांफ्रेस में प्रदर्शित किया गया। इसके साथ ही हमने यह भी समझा कि सहनशीलता को किसी मानसिक ढांचे के तहत नहीं समझा जा सकता। इसे सामाजिक व्यवहार में दिखना चाहिए। यह जन्मजात नहीं है। इस प्रकार हमने विभिन्न देशों की चित्र पुस्तकों के माध्यम से शांति की संस्कृति को प्रदर्शित करने का प्रयास किया जिसे विभिन्न देशों की चित्र पुस्तकों के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता था। यह प्रदर्शनी वर्तमान में भी विभिन्न देशों की यात्रा कर रही है और इसकी काफी पुस्तकों का वहां की स्थानीय भाषा में अनुवाद हो रहा है। इसके बारे में कई

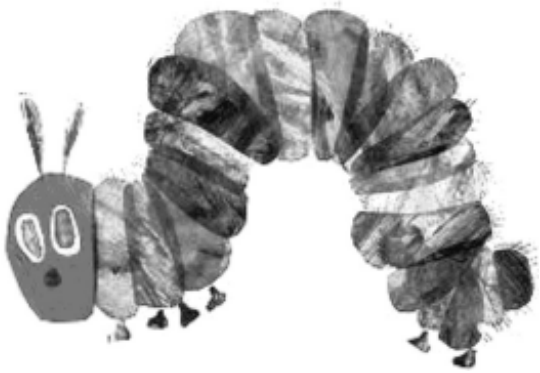

देशों की संस्थाओं के फीडबैक भी हमें मिले हैं। विभिन्न संस्थाओं में इसकी प्रदर्शनी लगी और हमने उन संस्थाओं की गतिविधियों को भी समझा है।

पुस्तकालय की दूसरी गतिविधि पुस्तकालय का वार्षिक प्रकाशन 'द व्हाइट रेवन्स' है। जिसमें 40 देशों की करीब 250 पुस्तकें प्रकाशित करने की संस्तुतियां हैं। इन पुस्तकों में हम एक छोटा-सा प्रतीक रखते हैं। यह पुस्तकें पाठकों में एक अंतर्राष्ट्रीय समझ को बढ़ाती हैं।

तीसरी मुख्य परियोजना के बारे में बताना चाहूंगी इसके अंतर्गत हमने 2003 में बच्चों व किशोरों के लिए 'चिल्ड्रेन बिटवीन दि वर्ल्ड्स, इंटरकल्चरल रिलेशन्स इन बुक्स फॉर चिल्ड्रेन एंड यंग एडल्ट्स' एक प्रदर्शनी आयोजित की थी।

प्रश्न : आप पेशे से कला इतिहासकार रहीं है और बाल पुस्तकों के चित्राकंन के बारे में आपकी गहरी समझ है। आप कई ज्यूरियों की सदस्य भी रही हैं। इस पर लेख व किताबें भी लिखी हैं जिसमें बुल्गारियाई चित्रकार इवान गंताश्चेव के बारे में लिखी किताब प्रमुख है। इसके बारे में हमें कुछ बताएं।

उत्तर : एक कला इतिहासकार होने के नाते मेरी विशेष रुचि बच्चों की किताबों के चित्रांकन में रही है। बच्चों की किताबों के चित्रांकन को एक पाठक की रुचि को ध्यान रखकर किया जाता है। लेकिन अधिकतर देखा यह जाता है कि चित्रांकन प्रकाशकों के वाणिज्यिक रुचि के कारण भी किए जाते हैं। मैंने चित्रकारों को अच्छे चित्रांकन के लिए हमेशा प्रोत्साहित किया है।

इसी तरह का उदाहरण इवान गंताश्चेव का है। इवान गंताश्चेव के जल रंगों की पेंटिंग को जापान में बहुत प्रशंसा मिली लेकिन अस्सी के दशक के दौरान जर्मनी में इनके काम में कोई खास रुचि नहीं थी। इवान का जन्म 1950 में बुल्गारिया में हुआ और वह 1966 में कम्युनिस्ट शासन के दौरान वहां से बच निकले तब से वे जर्मनी में रहते हैं और वे पचास बहुत अच्छी चित्र पुस्तकों के लिए जाने जाते हैं। 1990 की शुरुआत में जर्मनी के प्रकाशक माइकल नेजुबर ने उनकी दो सुंदर पुस्तकें प्रकाशित कीं - जिनमें 1991 में प्रकाशित 'गुड मार्निंग-गुड नाइट' जो कि सूरज और चांद में ज्यादा महत्त्वपूर्ण कौन, इसके बारे में है। इसके बाद 1992 में प्रकाशित 'फिलो, दि ट्री' जो एक पेड़ के बारे में है और जो अपने जानवर मित्रों के साथ रहता है। मैंने इन पुस्तकों के माध्यम से नई पीढ़ी के माता-पिता, शिक्षकों व पुस्तक विक्रेताओं को उनके काम से परिचित कराया। उन्होंने चित्रों के साथ कुछ किताबों का लेखन भी किया है जिसमें 1977 में प्रकाशित 'ओटा, दि बेयर', 1985 में प्रकाशित 'दि ग्रीन एंड ग्रे लैंड' तथा 1989 में प्रकाशित 'व्हेर इज वाल्डेमर' जो कि एक छछूंदर के बारे में है। इसके अलावा उनकी कई पुस्तकें जर्मन में हैं। एक और अच्छे चित्रकार हैं जिन्होंने महत्त्वपूर्ण पुस्तकें तैयार की हैं। पीटर सिस जो चेक - अमरीकी चित्रकार हैं। हाल ही में पीटर सिस को अपने चित्राकंन के संपूर्ण काम के लिए 2012 के हैंस क्रिश्चियन एंडरसन अवार्ड से सम्मानित करने की घोषणा हुई है। यह पुरस्कार उन्नीसवीं सदी के डेनमार्क के विश्व प्रसिद्ध बाल साहित्यकार - परी कथाओं के लेखक हैंस क्रिश्चियन एंडरसन की स्मृति में हर दो वर्ष में किसी एक जीवित लेखक एवं एक चित्रकार के संपूर्ण काम को ध्यान में रखकर प्रदान किया जाता है। यह बाल साहित्य के क्षेत्र में विश्व का एक बड़ा सम्मान है और इसे 'लिटिल नोबल' भी कहा जाता है।

मैंने 1995 में जर्मन लोगों को उनके काम से परिचित कराया। उन्होंने भी महत्त्वपूर्ण काम किया है और उनकी किताबों से मेरा व्यक्तिगत संग्रह भी दिनों-दिन बढ़ रहा है। उनकी महत्त्वपूर्ण किताबों में 1994 में प्रकाशित 'दि थ्री गोल्डेन कीज' जो उनके चेक गणराज्य की ऐतिहासिक राजधानी प्राग में उनके खोए हुए बचपन के बारे में है। 2007 में प्रकाशित 'दि वॉल' में उनके कम्युनिस्ट शासन के लौह पर्दे में बिताए हुए दिनों के बारे में है। 2000 में प्रकाशित 'मेडलेंका' न्यूयार्क के बहु-सांस्कृतिक वातावरण में रह रही एक छोटी बच्ची की मजेदार कहानी है।

प्रश्न : आपकी दिलचस्पी चित्रांकनों में है। आपकी राय में बच्चों के लिए अच्छे चित्राकनों की विशेषताएं हैं? बच्चों के लिए चित्र कैसे हों?

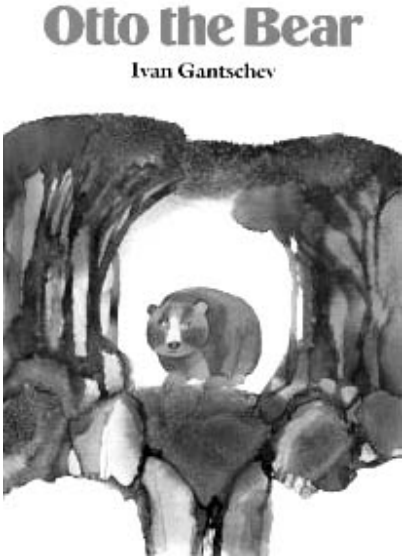

उत्तर : यह सवाल ऐसा है जैसे आप इस सवाल का जवाब दें कि सुन्दरता क्या है? अच्छा गाना आप किसे कहेंगे? इसे परिभाषित करना बहुत कठिन है, लेकिन मैं प्रयास करती हूं।

बच्चों के लिए अच्छे चित्रांकन ऐसे हों जो उन्हें आमंत्रित करते हों, उनकी पसंद के अनुरूप हों, कुछ इस तरह के हों जिनसे बच्चे तुरंत जुड़ाव महसूस कर सकें। वे बेहतरीन कला के उदाहरण हों यह जरूरी नहीं। वे ही तो बच्चों से बातें करते हैं, पाठ नहीं, इसलिए यहां अमूर्तन की छूट नहीं है। एक अच्छे लेखक और चित्रकार का मेल उत्साहवर्धक संभावनाओं के द्वार खोलता है, वे दोनों एक-दूसरे के काम को आगे बढ़ाते हैं। चित्र बनाने वाले को पाठ से आगे तक जाना पड़ता है ताकि आनंद के अनुभव को ऊंचाई पर ले जा सके, बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ाने में मदद कर सकें और उन्हें एक नए अनुभव का अहसास कराए।

कलात्मक अभिव्यक्ति सांस्कृतिक जड़ों से उपजती है, किसी भी देश के सौन्दर्यबोध से... इसलिए इसमें विविधता की अपार संभावना है। आप जितना देखते हैं उतने ही समृद्ध होते जाते हैं!

प्रश्न : हमें भारत में बाल पुस्तकों के चित्रांकन की बहुत-सी सीमाएं नजर आती हैं। आप दुनिया भर में बच्चों की किताबों से काफी हद तक परिचित हैं। संक्षेप में यह बताएं कि यूरोप की बाल पुस्तकों में चित्रांकन संबंधी किस तरह के बदलाव विगत वर्षों में रहे हैं?

उत्तर : यह एक कठिन प्रश्न है, हालांकि मैंने कुछ भारतीय चित्रकारों द्वारा तैयार की गई अच्छी चित्र पुस्तकें भी देखी हैं। इनमें पुलक विश्वास, जयंती मनोकरण, विकी आर्य जैसे चित्रकारों का काम रहा है। ए एंड ए ट्रस्ट द्वारा तैयार किए गए 100 भारतीय चित्र पुस्तकों के कैटलॉग में कुछ अच्छी पुस्तकों का चयन किया गया है जिसे इंटरनेशनल यूथ लाइब्रेरी एवं 2006 के फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेले में भी प्रदर्शित किया गया था। यह पहला अवसर था जब विदेश में भारतीय चित्र पुस्तकों के कैटेलॉग को प्रस्तुत किया गया। यूरोप की बाल पुस्तकों में चित्रांकन की विविधता व नए प्रयोग काफी देखने को मिलते हैं। उदाहरण के लिए, एरिक कार्ल की पुस्तक 'दि वेरी हंगरी केटरपिलर' पर गौर किया जा सकता है।

प्रश्न : आपकी रुचि का एक क्षेत्र बाल साहित्य में शोध का भी रहा है और इससे आप जुड़ी भी रही हैं। इस बारे में संक्षेप में प्रकाश डालें कि यूरोप में बच्चों के साहित्य पर किस तरह के विषयों पर शोध होते रहे हैं?

उत्तर : बच्चों की पुस्तकों पर शोध का कार्य विगत बीस वर्षों में यूरोप में काफी महत्त्वपूर्ण मुद्दा रहा है। जर्मनी के अलावा हमने अन्य पड़ोसी देशों में भी कई विश्वविद्यालयों में बाल साहित्य के विभाग स्थापित करवाने में काफी मदद की है। कुछ विश्वविद्यालयों में काफी अच्छा काम हो रहा है। जिनमें बच्चों की पुस्तकों को शिक्षण सामग्री के अलावा अकादमिक विषय के रूप में भी देखा जाता है। इन कार्यों में 2008 में रेनट वाइल्ड का 'हिस्ट्री ऑफ जर्मन चिल्ड्रेन्स लिटरेचर' प्रकाशित हुई है। इसी तरह 2009 में कार्टेन गांसेल व हरमन कोर्ट द्वारा संपादित 'चिल्ड्रेन्स एंड यंग एडल्ट लिटरेचर एंड नैरेटोलॉजी' प्रकाशित हुई है जिसमें बच्चों की विभिन्न पुस्तकों के नैरेटिव स्ट्रक्चर को समझने की अच्छी कोशिश हुई है। शोध के विषयों में बहु-सांस्कृतिकता से जुड़े मुद्दों की पुस्तकें, माता-पिता के अलगाव से जुड़ी पुस्तकें, भिन्न राष्ट्रीयता वर्ग से जुड़ी पुस्तकें, पलायन संबंधी मुद्दों से जुड़ी पुस्तकों पर काम देखने में आए हैं।

प्रश्न : इंटरनेशनल यूथ लाइब्रेरी की संस्थापिका जेला लेपमैन के अपने काम के अनुभवों के बारे में संक्षेप में कुछ बताएं।

उत्तर : उनसे मेरी व्यक्तिगत रूप में कभी मुलाकात नहीं हुई। उन्होंने 1957 में इंटरनेशनल यूथ लाइब्रेरी से अवकाश ग्रहण कर लिया था और 1970 में उनकी मृत्यु हो गई। वे काफी कर्मठ महिला थीं। यहां पर यह गौर करना होगा कि दूसरे विश्वयुद्ध के कुछ वर्षों के बाद एक यहूदी होते हुए भी उन्होंने जर्मन लोगों को शांति व सहनशीलता का संदेश दिया तथा इस तरह की संस्था स्थापित की। इसके लिए उन्हें सरकारी तौर-तरीकों के बीच अनुदान प्राप्त करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। उनका एक फोटो हमारी लाइब्रेरी में लगा हुआ है जिससे हम प्रेरणा ग्रहण करते रहे हैं।

प्रश्न : आप कहीं न कहीं भारतीय बाल पुस्तकों के अनुभवों से भी गुजरी होंगी। आपके क्या अनुभव रहे हैं?

उत्तर : मेरा मानना है कि भारतीय पुस्तकों को अपनी गुणवत्ता को सुधारने का प्रयास करना होगा। मेरा मानना है कि प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकें भी मिलनी चाहिएं जिससे उन्हें अपने आस-पास को समझने का मौका मिले और वे शांतिपूर्ण भविष्य में अपने जीवन के सपने देख सकें। इसके लिए मैं ए एंड ए ट्रस्ट की पुस्तकों की सराहना करना चाहूंगी जिन्होंने कई अच्छी पुस्तकों के अनुवाद प्रकाशित किए हैं। इससे बच्चों के अलावा शिक्षकों की समझ को भी विस्तार मिलेगा और वे दूसरे देशों की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।

प्रश्न : वर्तमान में आप किस तरह के कामों से जुड़ी हुई है? किन विषयों पर पढ़ना-लिखना कर रही है?

उत्तर : हाल फिलहाल मैं विभिन्न संस्थाओं के साथ सलाहकार की हैसियत से काम कर रही हूं। मैं भारत में ए एंड ए ट्रस्ट से भी जुड़ी हुई हूं। मैं सामग्री चयन में तथा नीतियों के निर्धारण में उनकी मदद करती हूं। इसके साथ ही उनके लिए कार्यक्रम बनाने में भी सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हूं। भारत में मैंने शीतला, नैनीताल में कुछ स्थानों पर भ्रमण किया है और बच्चों से भी बातचीत की है एवं उनकी जरूरतों को समझा है। इसके साथ ही मैं अपने घर पर एक पसंदीदा प्रोजेक्ट पर कार्य कर रही हूं जिसमें मैं बीसवीं सदी की अच्छी चित्र पुस्तकों को संगृहीत करने का काम कर रही हूं जिनकी प्रतियां बहुत ही सीमित मात्रा में हैं और जिन्हें बाजार ने बहुत स्वीकार नहीं किया गया है। ◆

(पिछले वर्ष जनवरी-फरवरी में वे भारत में अपनी व्यक्तिगत यात्रा पर आई थीं। इस दौरान हमने उनसे बातचीत की योजना बनाई थी लेकिन अपरिहार्य कारणों से रूबरू बातचीत संभव नहीं हो सकी। इसलिए उनसे ईमेल पर हमारी कुछ जिज्ञासाओं पर चर्चा हुई। इस बातचीत में अरूंधती देवस्थले का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है।)

प्रस्तुति : कमलेश चंद्र जोशी

पिछले 20 वर्षों से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र से गहरा जुड़ाव। प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं- शुरुआती साक्षरता, शिक्षक-शिक्षा, बाल साहित्य व पुस्तकालय आदि में गहरी रुचि। पूर्व में 'प्रारम्भ शैक्षिक संवाद' नामक पत्रिका का संपादन। वर्तमान में अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन, देहरादून से जुड़े हुए हैं।